Page I

MA Unit IV
Semester I

Topic – Definitions and nature of Personality

nature of Personality – व्यक्तित्व शब्द की उत्पत्ति यूनान के लैटिन के परसोना (Persona) से हुई है। जिसका अर्थ बनावटी रूप होता है। मनोवैज्ञानिकों ने इसी आधार मानकर व्यक्तित्व को परिभाषित किया है। सामान्यतः बोलचाल की भाषा में भी व्यक्तित्व का प्रयोग इसी अर्थ में किया जाता है इस दृष्टिकोण को सतही दृष्टिकोण कहते हैं। वाटसन, शरमैन के अनुसार अगर कोई व्यक्ति मधुरभाषी एवं फुर्तीला है तो उसे अच्छे व्यक्तित्व का व्यक्ति कहा जाता है इसके विपरीत व्यक्तित्व वाले व्यक्ति को बुरा कहते हैं।

व्यक्तित्व को तात्विक दृष्टिकोण (Substance approach) भी कहा जाता है। इस दृष्टिकोण द्वारा मनुष्य के स्वाभाविक स्थायी गुणों (inner essential nature) की व्याख्या की जाती है। वारेन एवं कारमाइकेल इस दृष्टिकोण के समर्थक माने जाते हैं जिसके अन्तर्गत बुद्धि (Intelligence)

Page 2

धातुस्वभाव (temprament), कौशल (Skill) नैतिकता (Morality) आदि आंतरिक गुण आते हैं।

अतः उपरोक्त तथ्यों के आधार पर किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को समझने के लिए उस व्यक्ति के बाहरी रंग-रूप, वेश-भूषा, चाल-ढाल के साथ-साथ उस व्यक्ति के अन्दर के गुण, स्वभाव, विचार, अभिरुचि, मनोवृत्ति पर ध्यान देना आवश्यक होगा।

अतः उपरोक्त दृष्टिकोण के अनुसार व्यक्तित्व को व्यक्ति के बाहरी एवं उसके आंतरिक स्वभाविक स्थायी गुणों को समन्वय समझा जा सकता है।

व्यक्तित्व के स्वरूप को और अधिक स्पष्ट करने हेतु एक सामान्य उदाहरण को लेते हैं। अगर कोई व्यक्ति सरकारी नौकरी के लिए आवेदन करते समय अपने किसी परिचित का नाम दे दिया है नियुक्ति करने वाला पदाधिकारी उस व्यक्ति से जिसका नाम दिया गया है गुप्त पत्र के द्वारा उस उम्मीदवार की योग्यता, चरित्र एवं व्यक्तित्व के संबंध में पूछता है तब उत्तर देते समय वह व्यक्ति, आवेदक के बारे में लिखता है कि आवेदक या उम्मीदवार का व्यक्तित्व आकर्षक है।

वह उत्साही, अध्यवसायी और ईमानदार होने के साथ-साथ प्रसन्नचित्त, सरल और विश्वासपात्र हो। इसी प्रकार [illegible] के कई विशेषण हैं जिनके उपयोग किसी के व्यक्तित्व को प्रकट करने हेतु किए जा सकते हैं।

व्यक्तित्व के उपरोक्त स्वरूप के आलोक में वुडवर्थ एवं मार्किस (Woodworth and Marquis) ने व्यक्तित्व के बारे में स्पष्ट करते हुए कहा है कि व्यक्तित्व व्यक्ति के व्यवहार की वह सम्पूर्ण विशेषता है जो व्यक्ति के विचारों और उसे प्रकट करने का तरीका, व्यक्ति की मनोवृत्ति और रुचि, कार्य करने के ढंग, उसके अपने दार्शनिक दृष्टिकोण से प्रकट होती है।

अतः उपरोक्त तथ्यों के अनुसार हम यह कह सकते हैं कि व्यक्तित्व में व्यक्ति के बाहरी रूप-रेखा, वेशभूषा तथा उसमें निहित गुण के अनुसार किसी कार्य करने की विशेष तरीका को प्रकट करने वाले गुणों का समन्वय होता है।

व्यक्तित्व के स्वरूप से यह स्पष्ट होता है कि [illegible] व्यक्तित्व के वास्तविक स्वरूप को संक्षेप में बताना आसान कार्य नहीं है क्योंकि किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को बताने वाला विशेषण (objectives) अमूर्त (abstract) होते हैं जिन्हें ठोस रूप में व्यक्त करना कठिन कार्य है। विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व की परिभाषा भिन्न-भिन्न रूप में दिया है जो निम्नलिखित

Page 4

(1) मार्टन प्रिंस (Morton Prince, 1924) – व्यक्तित्व व्यक्ति के सभी जैविक, जन्मजात प्रकृति, मनोवेग, प्रवृत्ति, अभिलाषा, मूल प्रवृत्ति तथा अर्जित प्रकृति एवं प्रवृत्ति का योगफल को कहते हैं।

(2) वाटसन (Watson, 1924) – किसी व्यक्ति का व्यक्तित्व उस व्यक्ति में लंबे समय तक देखी गई आदतों-तत्वों के संपूर्णता को व्यक्तित्व कहते हैं।

(3) मरे (Murray, 1948) – व्यक्ति के मस्तिष्क में जन्म से मृत्यु तक होनेवाली संगठनात्मक प्रक्रियाओं के संपूर्णता को व्यक्तित्व कहते हैं।

(4) ऑलपोर्ट, एफ (Allport, F.) – व्यक्तित्व व्यक्ति का सामाजिक उत्तेजनाओं के प्रति विशेष प्रक्रियाओं एवं उसके वातावरण की सामाजिक विशेषताओं के साथ समायोजन के गुण को कहते हैं।

(5) ऑलपोर्ट, जी (Allport, G.) – मनुष्य जैसा है वही उसका व्यक्तित्व है अर्थात व्यक्तित्व व्यक्ति के अंदर के गुणों अथवा तत्वों का गत्यात्मक संगठन है जो वातावरण में अभियोजन को निर्धारित करता है।

(6) शरमैन (Sherman) – व्यक्ति का विशिष्ट व्यवहार ही उसका व्यक्तित्व है।

उपरोक्त परिभाषाओं से व्यक्तित्व से व्यक्ति के व्यवहार का बोध होता है तो कुछ जैव भौतिक दृष्टिकोण, जीवरसायन (Bio-chemical) दृष्टिकोण तो कुछ शारीरिक रचना (Physiological structure) पर निर्भर करता है कुछ मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व को व्यक्ति के शील गुणों (Personality traits) को माना है इस प्रकार हम देखते हैं कि विभिन्न मनोवैज्ञानिकों का मत भिन्न-भिन्न है जो उनके दृष्टिकोण को दर्शाता है यह कहना आसान नहीं है कि कौन सी परिभाषा उपयुक्त है हम यह कह सकते हैं कि व्यक्तित्व अपने आप में संगठित है जिसमें व्यक्ति की जैविक, शारीरिक एवं मानसिक तत्वों का समावेश होता है व्यक्तित्व के वास्तविक स्वरूप को देखते हुए ऑलपोर्ट, जी द्वारा दी गई परिभाषा को उपयुक्त माना जा सकता है क्योंकि उन्होंने व्यक्तित्व को व्यक्ति के मनः शारीरिक गुणों अथवा तत्वों तत्वों का गत्यात्मक संगठन बताया है यही कारण है कि समय और परिस्थिति के अनुसार व्यक्ति का व्यवहार भी अलग-अलग स्वरूप का होता है यहीं व्यक्तित्व का वास्तविक स्वरूप अच्छी तरह नजर आता है

By
Kumar Patil
Assistant professor
Dept. of Psy.
Maharaja College, Ara